Original Research Paper Education

''सामाजिक विज्ञान की सम्प्रत्यात्मक समझः वैश्विक समाज की आवश्यकता''

अनामिका चौहान शोधकर्ता
प्रो॰ मेहनाज अंसारी पर्यवेक्षक

ABSTRACT शिक्षा सामाजिक विकास का सबसे प्रभावशाली माध्यम है। विद्यालयों में जितने भी विषय पढ़ाए जाते हैं उनमें से सिर्फ सामाजिक विज्ञान ही ऐसा विषय है जो कि व्यक्ति विशेष को, समाज में जीवन कैसे जीना है और समाज के विभिन्न अंगों से संबंधित भूमिकाओं का सफलतापूर्वक निर्वहन करना सिखाता है। इस विषय को पाठयक्रम में स्थान इसलिए प्राप्त हुआ है ताकि व्यक्ति विशेष एक उत्तम नागरिक व मानव के रुप में विकसित होने के पथ पर अग्रसर हो सके।
यह विषय अपने निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति में कितना सफल है?
शोधकर्ता ने दिल्ली प्रदेश के दस सरकारी विद्यालयों के आठवीं कक्षा के 850 छात्र–छात्राओं का अध्ययन किया।

KEYWORDS : सामाजिक विज्ञान, सम्प्रत्यात्मक समझ, व्यावहारिक जीवन।

21वीं सदी का मनुष्य अपनी व्यक्तिगत सोच, विचारों व अधिकारों को लेकर अत्याधिक संवेदनशील है। आज 'हम' की भावना का स्थान 'स्व' की भावना ने ले लिया है। अंततः विश्व में प्रतिस्पर्धा,, टकराव व असहिष्णुता की भावना बढ़ रही है। नई पीढ़ी पारिवारिक रिश्तों, सामाजिक रिश्तों, सामाजिक अंतर्क्रियाओं और मर्यादाओं की जटिलता व महत्व से अंजान है। 80 के दशक तक भारतीय समाज की बनावट इस प्रकार की थी कि स्वतः ही बच्चे में उपरोक्त वर्णित विषयों की समझ पोषित एवं पल्लवित होती थी।

21वीं सदी का समाज एकल पारिवारिक संरचना पर आधारित होने के कारण बच्चे में इन विषयों से संबंधित भावना व समझ का अभाव हो गया है। अंततः बच्चे को समाज, सामाजिक अंतर्क्रियाओं की जानकारी प्रदान करने, समझ विकसित करने और समाज के प्रति जागरूक बनाने का संवेदनशील उत्तरदायित्व विद्यालयों पर आ गया है।

'सामाजिक विज्ञान' विषय का केन्द्र व्यक्ति, समाज व उनके बीच की अंतर्क्रिया है। यह विषय सामाजिक संबंधों, सामाजिक सरंचना की जटिलता, सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता फैलाने व यथोचित समाधान निकाल पाने की संभावनाओं को जन्म देने की क्षमता रखता है। इस विषय की समझ ही छात्रों की चिंतन शैली व व्यवहार को सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त करती है।

आज दुनिया भर में इस विषय को उसकी महत्ता के अनुरूप अपनाने की दिशा में प्रयास हो रहे हैं।

'सामाजिक विज्ञान' में शामिल उपविषय व सम्प्रत्य छात्रों को सामाजिक जटिलताओं से रूबरू करवाता है और उनमें इन जटिलताओं को समझने के लिए नजरिया व संवेदनशीलता विकसित करने में सक्षम है (मिलियन व वुड्स, 2000)।

नृजातीयता, स्व श्रेष्ठता की भावना आदि सोच की संकीर्णता से छात्रों को परिचित करावाता है और मानवीय संबंधों व मानव की गरिमा के अनुरूप व्यवहार करने की सकारात्मक दिशा प्रशस्त करता है (एदिदियों ओवेल सोफेदकेन, 2012)।

संस्कृति, भाषा, रंग पर आधारित दृश्टिकोण को बदलकर, संबंधों, व्यवहार व व्यक्ति के गुणों पर आधारित सोंच को जन्म दे सकता है (साराह फलोरीन, 2007)।

इस विषय में शामिल प्रत्येक उपविषय व सम्प्रत्य समाज के विभिन्न पहलुओं से संबंधित है (तनुश्री धंधनिया, 2016)।

अतः इस विषय को गंभीरता से लेते हुए छात्रों में इसकी सम्प्रत्यात्मक समझ विकसित करने की दिशा में कार्य करना अत्यंत आवश्यक है।

अध्ययन का उद्देश्यः–
कक्षा आठ के छात्र–छात्राओं में इस विषय की सम्प्रत्यात्मक समझ को जांचना।

अध्ययन विधि व उपकरणः–
यह एक विवराणात्मक शोध है। शोधकर्ता ने दिल्ली के 10 सरकारी विद्यालयों, जिनका चुनाव रेंडम विधि द्वारा किया गया, आठवीं कक्षा के 850 छात्र–छात्राएँ इसका अंग बनें। परीक्षण उपकरण का निर्माण शोधकर्ता द्वारा किया गया व उसकी वैधता व विश्वसनीयता जांचने–परखने के बाद छात्रों पर परीक्षण किया गया।

विश्लेशण व परिणामः–
प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेशण करने के बाद यह परिणाम प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तर के छात्रों के पास इस विषय में अंतर्गत पढ़ाए जाने वाले किसी भी सम्प्रत्य की समझ 19 प्रतिशत से ज्यादा नहीं है।

परिणामः–
1. छात्रों में सम्पूर्ण सामाजिक अध्ययन विषय की सम्प्रत्यात्मक समझ – 19%
2. इतिहास की सम्प्रत्यात्मक समझ – 17%
3. भूगोल की सम्प्रत्यात्मक समझ – 25%
4. सामाजिक राजनैतिक जीवन की सम्प्रत्यात्मक समझ – 15%

कारणः–
1. यह विषय छात्रों के जीवन व उनके व्यवहार से जुड़ा है, परन्तु इसको पढ़ाते समय कक्षा में इसकी व्यावहारिकता की चर्चा करते हुए उसे छात्रों के वातावरण से जोड़ा नहीं जाता है, जिसक कारण छात्र इस विषय के महत्व को जानता ही नहीं है।
2. छात्रो को यह विषय अलगाव (Detached) के साथ–साथ, एक विषय के रुप में न पढ़ाकर इतिहास, भूगोल व राजनैतिक–सामाजिक जीवन आदि अलग–अलग विषय के रुप में पढ़ाया जाता है।
3. छात्र इस विषय को रटन्त प्रणाली से सिर्फ परीक्षा में सफल होने के लिए पढ़ते हैं।

विश्लेशण से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालयों में यह विषय जिस प्रकार पढ़ाया जा रहा है, वो छात्रों की अल्पकालिक स्मृति का ही अंग बन पाती है न कि उनकी सोच व व्यवहार का आधार। अतः छात्रों में इस विषय की सम्प्रत्यात्मक समझ व जागरूकता उत्पन्न करने के लिए शिक्षकों द्वारा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को रचनात्मक व प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।

ग्रंथसूची
1. बेनेडिक्ट, बी. (1965). मॉरीशसः प्राब्लम्स ऑफ ए प्लूरल सोसाइटी, लंदन और न्यूयार्कः प्रेग्रर।
2. बनवरे, शीला (1999). ग्लोबलाइजेशन, सोशल साइन्स एन्ड डेवलेपमेन्टः यूनिवर्सिटी ऑफ मॉरीशस।
3. ड्राफ्ट ऑफ ए नेशनल कुरिकुलम फ्रेमवर्क फॉर मॉल (2012). मिनिस्ट्री ऑफ एडुकेशन एण्ड एम्प्लाएमैंट दिसम्बर, सेलोसियन प्रेस, माल्टा।
4. जार्ज एण्ड मदन (2010). टीचिंग ऑफ सोशल साइन्स इन स्कूल्स, मेसी.आर.टी.।
5. कोठारी कमीशन (1960). एन सी ई आर टी, नई दिल्ली।
6. लिन डेविस, क्लाइव हार्बर एण्ड हिरोमी यमशिता (2011). ग्लोबल सिटिज़नशिपः द नीड्स ऑफ टीचर्स एण्ड लर्नस, सी.आई.री.आर, युनिवर्सिटी ऑफ बरसिंघम।
7. नेशनल पॉलिसी ऑफ एडुकेशन (1968). एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
8. नेशनल पॉलिसी ऑफ एडुकेशन (1986). एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
9. राश्ट्रीय पाठचर्या की रुपरेखा (2005). राश्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिशद, नई दिल्ली।
10. वर्ल्ड सोशल साइन्स रिपोर्ट नोलेज (2010). युनाइटेड नेशन्स एडुकेशनल, साइन्टफिक एण्ड कल्चरल ऑरगनाइज़ेशन, इंटरनेशनल सोशल साइन्स काउंसिल, यूनेस्को।
11. मिलिगन एण्ड वुड्स (2009). कन्सेप्चुएल अंडरस्टैंडिग एज ट्रांसिशन प्वाइंटसः मेकिंग सेंस ऑफ ए काम्पेक्स वर्ल्ड, रिसर्चगेट।
12. साराह फ्लोरीन (2009). कान्सेप्ट मैपिंग टू इम्प्रूव स्टुडेंट्स लर्निंग, डिपार्टमेंट ऑफ कम्युनिकेशन एण्ड कल्चर, इंडियाना युनिवर्सिटी, इंडियाना युनिवर्सिटी फैक्ट बुक 2008–2009।
13. एदिदियो (2012), सोशल स्टडीज एडुकेशन इन नाइजीरियाः द चैलेन्ज ऑफ ए बिल्डिंग ए नेशन, ब्रूनेल युनिवर्सिटी, लंदन।